श्रीराम शर्मा आचार्य का शैक्षिक चिंतन एवं उसकी वर्तमान में प्रासंगिकता

विवेक नाथ त्रिपाठी*

श्रीराम शर्मा जो कि आध्यात्मिकता एवं राष्ट्र निर्माण की प्रतिमूर्ति कहे जाते हैं, के विचारों में भारतीय संस्कृति, शिक्षा, मूल्य, नैतिकता एवं चारित्रिक निष्ठा की स्पष्ट झलक मिलती है। इस लेख में आचार्य श्रीराम शर्मा के शिक्षा संबंधी विचार, शिक्षकों के लिए संदेश, शिष्य एवं उनका कर्तव्य, व्यक्ति एवं समाज का निर्माण कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर वैचारिक एवं तर्कपूर्ण विश्लेषण कर विचार प्रस्तुत किए गए हैं तथा उपरोक्त बिंदुओं पर वर्तमान समकालीन शिक्षा की प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। वर्तमान समय में विभिन्न घटनाओं एवं असामाजिक कृत्यों से प्रतीत होता है कि मानवीय मूल्यों में गिरावट, मनुष्य का पतन एवं मानवता का स्तर गिरता जा रहा है। वर्तमान समकालीन शिक्षा मानवीय मूल्यों के संरक्षण, मानवता की संरक्षक एवं रोज़गार के साधनों का सृजन करने में पूर्णतः असफल होती जा रही है। वर्तमान समकालीन शिक्षा में अगर आचार्य श्रीराम शर्मा जी के विचारों का समावेशन किया जाए तो निश्चित रूप से समकालीन शिक्षा अपने पुरातन एवं आध्यात्मिक मूल्यों का सृजन करने में सफल होगी।

भारत की इस गौरवशाली भूमि का यह इतिहास रहा है कि इसने समय-समय पर ऐसे व्यक्तित्व को जन्म दिया है जिन्होंने संपूर्ण वसुधा के उद्धार एवं इस संसार के नवनिर्माण के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया, चाहे वे विवेकानंद रहे हों या फिर महर्षि अरविंद या श्रीराम शर्मा आचार्य। आचार्य जी का जन्म 20 सितंबर, 1911 में आगरा के अवालखेड़ा गाँव में हुआ था। आचार्य जी पर पंडित मदन मोहन मालवीय, गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर, श्री अरविंद आदि के आध्यात्मिक विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। स्वालंबन, स्वाभिमान एवं आत्मावलंबी राष्ट्र हेतु 'ज्ञानपर्व कार्यक्रम' की शुरुआत आचार्य के द्वारा की गई। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद एवं अन्य विषयों पर 3200 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। 1964 में सर्वधर्म सभा द्वारा आचार्य को 'लाइट ऑफ़ इण्डिया पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया। युगदृष्टा, गायत्री के सच्चे उपासक, समाज निर्माण की प्रतिमूर्ति आचार्य 19 सितंबर, 1994 को महापरिनिर्वाण को प्राप्त हो गए। परंतु उनके विचार आज भी समाज में जीवित हैं और युगों-युगों तक रहेंगे।

**सहायक आचार्य*, शिक्षा विभाग, बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226025

© NCERT not to be republished

शिक्षा

भारतीयों का दृष्टिकोण सदैव ही आध्यात्मिक रहा, इसलिए भारतीय संस्कृति इसकी संपोषक रही है, शिक्षा भी धर्म एवं आध्यात्म के प्रभाव से अछूती नहीं रही है। श्रीराम शर्मा आचार्य भी भारतीय दृष्टिकोण से पूर्णतः प्रभावित थे, परंतु अन्य की तुलना में शिक्षा को लेकर उनके विचार थोड़े अलग हैं। हम जानते हैं कि किसी भी देश का विकास मेरुदंड शिक्षा को कहा जाता है, अतः शिक्षा राष्ट्र निर्माण का साधन होती है।

शिक्षा सदा से ही आवश्यक और महत्वपूर्ण मानी जाती रही है। आज तो यह जीवन का अनिवार्य अंग बन गई है, तभी तो आचार्य कहते हैं कि शिक्षा का सीधा अर्थ 'संस्कारों का प्रशिक्षण है' इसे नैतिकता, सामाजिकता, सज्जनता, प्रमाणिकता आदि किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है। आचार्य शिक्षा, विद्या और ज्ञान— तीन बिंदुओं पर चिंतन को स्पष्ट करते हैं। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में उनका शिक्षा से संबंधित यह विचार जो मनुष्यत्व का सृजन करे, स्वार्थ नष्ट करे, न्याय करना सिखाए, शिक्षा कहलाती है।

वे कहते हैं कि शिक्षा वह है जो मानवता का कल्याण करे, जो बुद्धि के विकास में सहायक हो, जिसमें स्वावलंबन की शक्ति मिले, जो मुक्ति के योग्य बनाए, जो मनुष्यत्व का पूर्ण विकास करे, जो सद्गुणों का प्रयोग करना सिखाए, जो प्रेम करना सिखाए, जिससे सद्चरित्र का निर्माण हो, वही वास्तविक शिक्षा है। अगर उपरोक्त वर्णित शैक्षिक चिंतन के एक-एक बिंदु को विश्लेषित करें तो हम पाएँगे कि वर्तमान में आचार्य का शैक्षिक चिंतन प्रासंगिक एवं सार्थक है, क्योंकि वर्तमान में प्रचलित शिक्षा व्यवस्था न तो आज के युवाओं को मानवता का पाठ पढ़ा पा रही है और न ही उनके चरित्र निर्माण में पूर्णतः सफल है तथा स्वावलंबी न बना पाना भी आज की शिक्षा का एक प्रमुख दोष है। शैक्षिक प्रसार तो हो रहा है, लेकिन नैतिक एवं मानसिक पतन भी होता जा रहा है। युवा विचार करने की क्षमता खोते जा रहे हैं। तभी तो आचार्य ने कहा था कि लिखना-पढ़ना जान लेना शिक्षा नहीं है, शिक्षा तो वह है जो मनुष्य में देवत्व का दर्शन कराए।

अपनी कृति *मेरे सपनों का विश्वविद्यालय* में उन्होंने लिखा है कि आज देश में शिक्षा के अनेक विश्वविद्यालय मौजूद हैं, पर जीवन जीने की कला सिखाने वाला एक भी नहीं है। राष्ट्र निर्माण के लिए जिस तरह के समाज की परिकल्पना रखी गई है, वह भी नहीं है। वे कहते हैं कि मनुष्य चाहे कितना ही पढ़ा-लिखा क्यों न हो, यदि उसे सही ढंग से विचार करना, समाज का सुनियोजन करना, प्रतिकूलताओं से मोर्चा लेना, समाज के अन्य घटकों के साथ रहना नहीं आता है, तो फिर उसका पढ़ना-लिखना बेकार है, बल्कि उस पर लगाया गया धन भी राष्ट्रीय अपव्यय के समान है।

उनका मानना है कि शिक्षा से मानव में पूर्णता आती है, जीवन स्तर और बौद्धिक शक्ति का विकास होता है, राष्ट्र का उत्थान अच्छी शिक्षा प्राप्त होने से ही हो सकता है। अतएव शिक्षा के सर्वांगीण विकास के मूल तत्व को विकसित करना नितांत आवश्यक है। शिक्षालयों का वातावरण अच्छा बनाने के लिए प्रत्येक संभव प्रयत्न किया जाए। मनुष्य के मस्तिष्क के साथ ही उसके हृदय को विशाल एवं उदार बनाने

© NCERT not to be republished

वाली शिक्षा की नितांत आवश्यकता है। उदारता के अभाव में समाज के अंदर विभिन्न वर्ग, समुदाय, जाति आदि की खाई बढ़ती जा रही है और हमारी समकालीन शिक्षा इस बढ़ती खाई को पाटने में पूर्णतः असफल होती जा रही है।

ज्ञान का संप्रत्यय

मनुष्य में देवत्व की अभिलाषा जाग्रत करने वाले, स्वाध्याय को मानसिक शुद्धि का साधन मानने वाले आचार्य कहते हैं कि, 'ज्ञान अनिर्वचनीय है' "ज्ञानवानेव सुखवानज्ञानवने जीवति। ज्ञानवानेव बलवास्तेस्माज्ज्ञान मयोभव।।"

अर्थात् ज्ञान ही सुख है, ज्ञान ही जीवित है, ज्ञान ही बलवान है, इसलिए ज्ञानी ही बनना चाहिए। ज्ञान के समान पवित्र करने वाला कोई नहीं है। ज्ञान को आत्मा का नेत्र कहा गया है, वे कहते हैं, कि— ज्ञानविहीन व्यक्ति के लिए इस संसार में जो कुछ उत्कृष्ट हो उसको देखना उतना ही कठिन है, जितना दृष्टि के अभाव में एक व्यक्ति का भौतिक संसार को देखना। आचार्य कहते हैं कि भौतिक जीवन की सफलता और आध्यात्मिक जीवन की पूर्णता के लिए ज्ञान प्रथम सोपान है, जो स्वाध्याय सत्संग, चिंतन, मनन के आधार पर प्राप्त होता है। स्कूली शिक्षा ज्ञान की श्रेणी में नहीं आती है। उनका मानना है कि ज्ञान से अज्ञान का निवारण होता है। *गीता* के 17/15 श्लोक में कहा गया है कि नित्य स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति दुखों से पार हो जाता है। विभिन्न शोध परिणामों से भी यह पता चला है कि आज के विद्यार्थियों में स्वास्थ्य, एकाग्रता एवं ध्यान की कमी होती जा रही है। विद्यार्थी विद्यालय में बैठकर अध्ययन करना नहीं चाहते हैं। आज स्वाध्याय का प्रचलन लगभग समाप्त होता जा रहा है। इस वर्तमान दशा को देखकर आचार्य के ज्ञान का संप्रत्यय समकालीन शिक्षा में लागू करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

शिक्षार्थियों के लिए संदेश

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, वे कहते हैं कि युवाओं को दुष्ट प्रवृत्तियों के दुश्चक्रों से उबरकर स्वयं को समग्र क्रांति के लिए प्रस्तुत हो जाना चाहिए, जिसका मूल उद्देश्य सृजन हो। इस प्रकार की स्थिति में युवाओं, शिक्षार्थियों से आशा और बढ़ जाती है कि वे अपने आलस्य, संकीर्णता को त्याग कर सृजन के इस अभियान में स्वयं को जोड़ें व अपने राष्ट्र, समाज एवं विश्व के उज्ज्वल भविष्य को साकार करने में अपनी भूमिका को दर्ज कराएँ। उनका मानना था कि युवाओं को स्वयं को पहचानना होगा, अपने ऊपर भरोसा करना होगा, अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुननी होगी, बाधाओं को कुचलकर अकेले चलना होगा। सफलता तुम्हारा इंतज़ार कर रही होगी। अपनी आशाओं को दूसरों में देखना, अपनी मौलिकता का ह्रास कर अपने साहस को पंगु कर देना है, वे मानते हैं कि युवाओं को सृजनात्मक कार्य करना चाहिए और इसके लिए स्वयं पर विश्वास करना आवश्यक है। इस प्रकार आचार्य आज के युवा विद्यार्थियों को एक संपूर्ण राष्ट्र के निर्माण हेतु संदेश देते हैं जिसमें स्वयं पर विश्वास, स्वार्थी मानसिकता का त्याग, स्वयं की पहचान प्रमुख हैं। आज कुछ युवा भटक गए हैं, वे दूसरों पर विश्वास और उचित निर्णय न लेने के कारण अपनी पहचान खो बैठे हैं। उनका स्वयं

© NCERT not to be republished

अपनी क्षमताओं से विश्वास कम हो गया है। इस प्रकार युवाओं को आचार्य के विचारों से सीख लेकर आगे बढ़ना होगा। वर्तमान युवाओं में बढ़ती निराशा, हताशा के भाव को कम करने में आचार्य के विचार अत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगे।

आचार्य का शिक्षकों के लिए संदेश

आचार्य कहते हैं कि दो तरह के शिक्षक हैं— एक, जो बाहरी ज्ञान का प्रचार-प्रसार एवं शिक्षा प्रदान करते हैं और दूसरा, हम सबके अंदर बैठा हुआ है। वे कहते हैं कि आप बाहरी शिक्षक को तो धोखा दे सकते हो, लेकिन अपने अंदर बैठे हुए शिक्षक को कैसे धोखा दोगे, जो हर पल तुम्हें उचित और अनुचित का ज्ञान कराता रहता है। शिक्षकों के अंदर भी ऐसा ही एक शिक्षक उनकी आत्मा के रूप में, उनके अंदर बैठा हुआ है। अतः उन शिक्षकों को अपनी उस आत्मा की आवाज़ को सुनना है। उनका मानना है कि शिक्षा एक प्रतिपादन है, उसका मूर्तरूप शिक्षक है, जिसके ऊपर संपूर्ण राष्ट्र और समाज की ज़िम्मेदारी होती है। वर्तमान समकालीन शिक्षक को विद्यार्थियों में शालीनता, सज्जनता, ईमानदारी एवं सत्प्रवृत्तियों का विकास करना होगा तथा अपने चरित्र, व्यवहार एवं गुण कर्म भाव से विद्यार्थियों का आदर्श बनना होगा। शिक्षक को चाहिए कि वह अपने श्रेष्ठ आचरण से श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण करता रहे। वर्तमान शिक्षकों के लिए यही उनका संदेश है।

शिक्षा एवं विद्या

शिक्षा एवं विद्या में अंतर करते हुए आचार्य बताते हैं कि शिक्षा भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है। वे कहते हैं कि जानकारी का नाम शिक्षा है, दूसरी तरफ़ विद्या को शिक्षा से महत्वपूर्ण मानते हैं और कहते हैं कि विद्या वह है जो सद्गुणों का विकास करे, सही रास्ते पर चलना सिखाए, सही और गलत का ज्ञान कराए, उसे विद्या कहते हैं। उनका मानना है कि मनुष्य का सर्वांगीण विकास करने हेतु शिक्षा में विद्या के अंगों का समावेश कर देना चाहिए, चाहे नाम इसका कुछ भी हो, पर उद्देश्य एक हो जिससे अच्छा नागरिक बन सके, समाज का नेतृत्व किया जा सके और एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण किया जा सके। उनका मानना है कि शिक्षा और विद्या की उपयोगिता और शिक्षा के स्वरूप के बारे में हर विचारशील आदमी को चिंतन करना चाहिए। राष्ट्र की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के समाधान के लिए ऐसा हल खोजा जाए, जिससे अपना देश शिक्षित बन सके और व्यक्तित्व का विकास करने वाला बन सके और विश्व शांति का आधार बन सके। अगर हम आचार्य के शिक्षा एवं विद्या के संप्रत्यय को समकालीन शिक्षा एवं सामाजिक परिवेश में देखें तो न तो वह शिक्षा है और न ही विद्या। ऐसे में हमें यह समझना होगा कि समकालीन शिक्षा में विद्या का समावेशन कैसे हो जो समाज को उसकी नैतिक ज़िम्मेदारी का एहसास कराते हुए आध्यात्मिक मूल्यों को ध्यान में रखकर रोज़गार का सृजन कर सके।

श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रमुख योगदान

'हम बदलेंगे युग बदलेगा' इस प्रमुख ध्येय वाक्य के आधार पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से समाज में वैचारिक चेतना जाग्रत करने वाले आचार्य

© NCERT not to be republished

के विचारों को उनके ही शिष्य डा. प्रणव पंड्या द्वारा देव संस्कृति विश्वविद्यालय के ध्येय वाक्य में रखा गया और उसको पूर्ण रूप से लागू करने का कार्य किया जा रहा है। 'समकालीन शिक्षा में आध्यात्मिक प्रशिक्षण, सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास तथा आध्यात्मिकता का वास्तविक अनुभव से प्रशिक्षण प्राप्त कर समाज के लिए जो उपयोगी हो, उसका हस्तांतरण कर सकें।' ऐसे विद्यार्थियों का सृजन करना देव संस्कृति विश्वविद्यालय का प्रमुख लक्ष्य रखा गया है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने में निरंतर अग्रसर है। इस प्रकार आचार्य ने मानवता के कल्याण हेतु विभिन्न प्रकार की शैक्षिक संस्थाओं का बीजारोपण किया है जो समकालीन शिक्षा व्यवस्था में भारतीयता एवं आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत शैक्षिक परिवेश का निर्माण कर, राष्ट्र कल्याण में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। आचार्य कहते हैं कि, "ऐसी शैक्षिक संस्थाओं की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों को एक प्रज्ञावान, स्वार्थविहीन, नेक हृदय बनाकर एक मानवतावादी मनुष्य का निर्माण कर सकें।" उनके इस विचार को आधार बनाकर प्रखर युवाशक्ति के मार्गांतरण हेतु, सद्भाव, संवेदना को प्रमुखता से शामिल करते हुए समाज की विसंगतियों को दूर करने के लिए अनेक शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना की गई है जिसमें कुछ प्रमुख संस्थाएँ, यथा— शांति कुंज आश्रम, हरिद्वार, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, अखंड ज्योति संस्थान, गायत्री शोधपीठ, गायत्री परिवार आदि कुछ प्रमुख शोध एवं शैक्षिक संस्थानों की स्थापना की गई है जो भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुकूल शिक्षण विधियों का प्रयोग कर, शिक्षा प्रदान करते हुए मानवता के सच्चे सिपाहियों का सृजन कर रही हैं। इनके किए गए प्रमुख कार्यों में अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थापना (जो वैदिक सनातन धर्म के सिद्धांतों पर) 1950 के दशक में की गई जो सबसे महत्वपूर्ण एवं सफल रही, इसके अतिरिक्त हिंदू सुधार आंदोलन, विचार क्रांति अभियान, प्रज्ञा अभियान आदि कार्यक्रमों का सफल संचालन किया गया, जिनका प्रमुख उद्देश्य जनमानस में वैचारिक परिवर्तन लाकर समाज का उत्थान करना था।

श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में उपयोग

शिक्षा, किसी भी राष्ट्र के विकास का मूल कारक होती है और राष्ट्र का विकास उस राष्ट्र के नागरिकों के शैक्षिक स्तर से होता है। आचार्य के शैक्षिक विचारों की उपयोगिता का निर्धारण वर्तमान, पूर्व एवं भविष्य— तीन बिंदुओं के परिप्रेक्ष्य में किया जा सकता है अथवा वर्तमान का पूर्व से और भविष्य की वर्तमान से आवश्यकता अनुकूल तुलना की जाती है और मुख्यतः इन बिंदुओं का ध्यान रखा जाता है कि शिक्षा क्या है, क्या होनी चाहिए, और जो है उसका परिणाम क्या होगा? अथवा प्रचलित शिक्षा क्या वर्तमान समाज के लिए उपयोगी एवं उसकी आवश्यकता के अनुकूल है? क्या रोज़गार का सृजन करने में सफल है? क्या इस समकालीन शिक्षा से व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास, नैतिकता का विकास, चारित्रिक विकास आदि संभव हैं। यदि नहीं तो स्पष्टतः समकालीन शिक्षा अपने लक्ष्य से भटक गई है। आज दिन-प्रतिदिन रोज़गार के अवसर सृजन करने में समकालीन शिक्षा कुछ हद तक

विफल रही है। विद्यार्थियों के नैतिक एवं चारित्रिक विकास का अभाव होता जा रहा है। आध्यात्मिकता में वैज्ञानिकता का अभाव होता जा रहा है। इस प्रकार के परिदृश्य में आचार्य के शिक्षा संप्रत्यय, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए संदेश 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना 'एक राष्ट्र एक पाठ्यक्रम की संकल्पना' पर विचार किया जा सकता है।

आचार्य व्यक्ति, परिवार और फिर समाज का निर्माण शिक्षा के माध्यम से करने की बात करते हैं। 'वसुधैव कुटंबकम्' की भावना का जागरण करने वाले आचार्य के विचार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत ही उपयोगी हैं। वर्तमान शिक्षा पद्धति में आचार्य के विचारों को शामिल कर, नए राष्ट्र का निर्माण करना होगा। विद्यार्थियों के बस्ते के बोझ को कम करने का विचार हो या फिर जीविकोपार्जन के लिए एकसमान पाठ्यक्रम की संरचना, संपूर्ण राष्ट्र के लिए हो या फिर शिक्षित लोगों द्वारा शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए श्रमदान करने की बात हो या फिर परीक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों के उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण का निर्धारण विद्यार्थियों के व्यावहारिक ज्ञान के आधार पर करने की बात हो या अनुशासन का पालन करने की बात हो, चाहे अध्यापकों के लिए उचित वेतन निर्धारण की या फिर प्राचीन गुरुकुल परंपरा का पुनः जागरण या विद्यारंभ करने से पहले प्रार्थना सभा का आयोजन करने की, उपरोक्त सभी बिंदुओं पर आचार्य द्वारा प्रस्तुत किए गए विचार वर्तमान शिक्षा के लिए उपयोगी हैं। 'बस्ते का बोझ कम' करना आज के शैक्षिक परिदृश्य की एक समस्या बन गई, अंकों के आधार पर पास करना अवसाद को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा। शिक्षा को सिर्फ़ रोज़गार का साधन माना जा रहा है जबकि आचार्य कहते हैं, शिक्षा का उद्देश्य बौद्धिक विकास, मनुष्य में सभ्यता की स्थापना, मनुष्य को जीविकोपार्जन के लिए जहाँ आवश्यक हो वहाँ स्वावलंबी बनाना है।

इस प्रकार आचार्य के शिक्षा से संबंधित दिए गए विचार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगी हैं, वे कहते हैं कि आवश्यकतानुसार शिक्षा में नामांकन एवं पाठ्यक्रम का निर्माण होना चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानव की समस्त प्रकार की समस्याओं का समाधान करना है, स्वास्थ्य से लेकर फ़िज़ियोलोजी तक जीवन में काम आने वाले ज्ञान को सर्वसाधारण के लिए अनिवार्य किया जाए। प्राचीन गुरुकुल परंपरा को जीवित किया जाए, वातावरण पर विशेष ध्यान दिया जाए, भावी पीढ़ी का निर्माण राष्ट्रीय कर्तव्य मानकर किया जाए, शिक्षा के लिए अधिक धनराशि खर्च की जाए। उपरोक्त शैक्षिक विचार वर्तमान शिक्षा में पूर्णरूपेण उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। दिन-प्रतिदिन आचार्य के विचारों की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। आज शिक्षा में भारतीय दृष्टिकोण लाना आवश्यक हो गया है। इस प्रकार, वर्तमान परिदृश्य में आचार्य की शिक्षा के विभिन्न पक्षों से संबंधित विचार बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे। यदि उनके विचारों को वर्तमान समकालीन शैक्षिक व्यवस्था में शामिल किया जाए तो भारतीय दृष्टिकोण को संरक्षण मिलेगा।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

युगनिर्माण योजना संपादन संकलन. 2013. *युगऋषि के संदेश*. युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट. गायत्री तपोभूमि, मथुरा.

शर्मा. 1998. *मनुष्य में देवतत्व का दर्शन*. गायत्री तपोभूमि, मथुरा.

शर्मा और पंड्या. 2010. *सार्थक एवं समग्र शिक्षा का स्वरूप*. युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा.

शिक्षकों के लिए संदेश. 2018. *नवभारत टाइम्स*. सितंबर, मथुरा.

© NCERT not to be republished